[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3484

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

संगीत का सामाजिक सरोकार

अवधेश प्रताप सिंह तोमर
सहा. प्राध्यापक, संगीत विभाग
डॉ.हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर म.प्र.

व्यक्ति की रचनात्मक प्रतिमा एवं सृजनशीलता का परिणाम ललित कलाओं का उदय है। जनचित्तरंजन एवं समय बांटने के उद्देश्य से रची गयी नाट्य, संगीत एवं दृश्य सामग्रियां (चित्र एवं शिल्प) आज अन्य उद्देश्यों की पूर्ति भी कर रही है। जन जागरण और सामाजिक चेतना का प्रसार एक ऐसा कार्य है जो संगीत के मध्य से प्राचीन काल से संपादित होता आया है और आज भी जारी है।

वैदिक ऋचाओं के गायन के माध्यम से अनेक सामाजिक उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को प्रसारित किया गया जैसे नदियों की प्रशंसा करके उनके संरक्षण एवं सुचिता पर ध्यान आकर्षित कराया गया उन्हें अन्न दात्री मानकर पूजनीय माना गया।

अतारिषुर्भरता गव्यवः समभक्त विप्रः सुमतिं नदीनां।
प्र पिन्वध्वमि ायन्तीः सुराधा आ वक्षणाः पृणध्वं यात शीभं।। ऋक् 3/12

राम–चरित्र का मंचन एवं गायन हमें मर्यादा पुरूषोत्तम के चरित्र से कुछ ग्रहण करने के उद्देश्य से ही किया जाता रहा है, भले आज ध्वनि विस्तारक यंत्रों द्वारा अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने के अतिरिक्त और अन्य लाभ कोई भी ग्रहण नहीं करता।

देश–काल–परिस्थिति अनुसार नाटकों, संगीत रचनाओं एवं शिल्प का उद्देश्य बदलता रहा है। समाज में सत्कर्मो से मोक्ष प्राप्ति के लक्ष्य को मनीषियों ने धर्म से जोड़कर प्रभावकारी बनाया।

कला जीवन में अत्यंत उपयोगी है उसकी सार्थकता समाज, राष्ट्र एवं विश्व की उन्नति से पहले व्यक्तिगत चारित्रिक उन्नयन में है जिससे पूर्वोक्त सभी का स्वतः विकास सुनिश्चित है।